Date :

HISTORY (H) PART
B.A.- III 'C'
PAPER - VIth
HISTORY OF India (1550-1750)
UNIT - II polity.

Mugal administration system.
Mansab and Jagir.

जागीरदारी प्रथा क्या थी:
मुगल काल के शासकों द्वारा शुरु की गई मनसबदारी प्रथा के साथ ही जागीरदारी प्रथा भी शुरु हो गई थी। दरअसल जब मनसबदार को वेतन में जमीन का टुकड़ा और उस टुकड़े पर कर वसूलने का अधिकार मिलने से इस प्रथा का आरंभ माना जाता है। इस प्रकार सम्राट से मिला वेतन के रूप में जमीन का टुकड़ा जागीर कहलाता था और मनसबदार

Scanned with CamScanner

SELCO

Date :

जागीरदार कहलाता था। यह एक प्रकार का सामंतशाही प्रथा का ही रूप था।

⇒ कैसे शुरू हुई जागीरदारी:–

जागीर मूल रूप से फारसी भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ होता है भूमि और दार का अर्थ अधिकारी। इस प्रकार वह व्यक्ति जो भूमि का स्वामी है वह जागीरदार कहलाता है। यह प्रथा मुगल शासकों द्वारा अपने अधिकारियों को भूमि पुरस्कार के रूप में सौंपने से शुरू हुई मानी जाती है। इसके साथ ही उस जमीन का कर वसूलने का हक भी उन्हें मिल जाता था। दिल्ली के आरंभिक शासकों द्वारा इस प्रथा को शुरू किया था लेकिन बाद मे इस सामंतवादी प्रथा के कारण केंद्रीय सरकार कमजोर होती देख

Scanned with CamScanner

Date :

सुल्तान बलबन और लेकिन अलाउद्दीन खिलजी ने इस पर रोक लगा दी थी। लेकिन तुगलक वंश के सुल्तान फिरोज-शाह तुगलक ने इसे पुनः शुरु कर दिया। हालाँकि शेर शाह सूरी और अकबर इस प्रथा के विरोधी थे और उन्होंने इस पर रोक भी लगा दी। इसके बाद मुगल शासकों ने इसको सामंतवादी प्रथा लागू कर दिया।

⇒ काम और अधिकार –
जागीरदारों को अपने अधीन भूमि का कर वसूलने का अधिकार प्राप्त था। शासन के कार्य के लिए इस कर राशि का एक बड़ा हिस्सा सैन्य शक्ति को मजबूत करने में लगाना भी उसके काम में शामिल था। मनसबदारी प्रथा की भाँति जागीरदारी भी केवल जीवित

SELCO

Date :

के जीवन के लिए ही होती थी।
आनुवांशिक न होने के कारण
जागीरदार की मृत्यु होने के
बाद यह पद और संपत्ति शासक
के अधिकार में वापस चली
जाती थी। लेकिन यहाँ अंतर
यह था कि यदि जागीरदार
का पुत्र चाहे तो वह निश्चित
रकम का भुगतान करके उस
जागीर का नवीनीकरण करवा
सकता था।

3) जागीरदारी का अंत: —

जागीरदारी का अंत ब्रिटिश
शासन के अंत के साथ हो
गया था। कुछ जागीरें ईस्ट
इंडिया कंपनी को दे दिया
इसमें तमिलनाडु के तत्कालीन
नवाब मोहम्मद अली ने बंगाल
की खाड़ी के किनारे की जमीन
कंपनी को दे दी थी। इसके
अलावा आजादी के बाद
इस प्रथा को कानून बना

Scanned with CamScanner

Date :

कर समाप्त कर दिया।

⇒ मनसबदारी व जागीरदारी में संबंध:-

परस्पर दोनों में प्रत्यक्ष रूप से कोई संबंध नहीं दिखाई देता है। लेकिन मूल रूप से दोनों ही एक इकाई से संबंधित थे।

मनसबदार राज दरबार के उच्चाधिकारी होते थे जिनके पास राजनैतिक व प्रशासनिक अधिकारी के कार्य होते थे। जागीरदार जबकि राज्य की ओर से कर वसूलने और उसका हिसाब-किताब रखने का कार्य करते थे।

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D College
Tajpur

Scanned with CamScanner